

साथे में बैंकिंग

पॉल क्रुगमैन



यदि ठीक से काम करें तो बैंक कमाल के होते हैं और आम तौर पर वे ठीक से काम करते भी हैं। लेकिन नहीं करते तो मानो कयामत आ जाती है, जैसा कि वर्ष 2008 में संयुक्त राज्य अमरीका (यू.एस.ए.) और लगभग सारी दुनिया में हुआ।

हम सोचते थे कि बैंकिंग संकट का युग तो 70 साल पहले ही खत्म हो जाना चाहिए था। क्या हमारे देश यानी अमरीका में बैंक पूरी तरह नियंत्रित, बीमाकृत और सरकार द्वारा प्रत्याभूत या गैरंटीड होते हैं? हाँ भी और नहीं भी। परम्परागत बैंकों के लिए हाँ, परन्तु वर्तमान निवेश बैंकों के लिए ऐसा नहीं है। इस उलझन को समझने में बैंकिंग प्रणाली और बैंकों

के नियमन का संक्षिप्त और चुनिन्दा इतिहास मददगार साबित होगा।

बैंकिंग का इतिहास

ऐसा माना जाता है कि परम्परागत बैंकों की शुरुआत सुनारों से हुई। इनका मुख्य काम तो आभूषण बनाना था लेकिन इसके साथ-साथ लोगों के सोने-चांदी के सिक्कों की रखवाली करना, उनके लिए एक फायदेमन्द उपव्यवसाय बन गया था। सुनारों की दुकानों पर बढ़िया तिजोरियाँ होती थीं, इसलिए लोग अपना धन पलंग के नीचे किसी मज़बूत सन्दूक में न रखकर, सुनारों के पास रखना ज़्यादा सुरक्षित महसूस करते थे।

कुछ वक्त बाद, सुनारों को समझ

बॉक्स

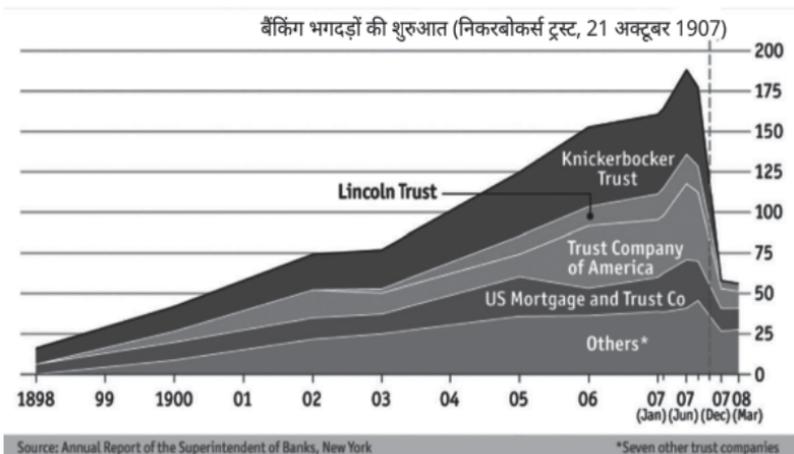
किसी भी देश की मौद्रिक नीति और वित्तीय प्रणाली का सुचारु रूप से संचालन सुनिश्चित करने के लिए जिम्मेदार संगठन, केन्द्रीय बैंक कहलाता है। अधिकांश देशों में केन्द्रीय बैंक या मुद्रा बोर्ड होते हैं। किसी भी देश की बैंकिंग प्रणाली, उस देश के केन्द्रीय बैंक द्वारा स्थापित व लागू किए गए नियमों और ऐसे संस्थानों की स्वतंत्रता द्वारा सुरक्षित रहती है।

आया कि उनकी देखभाल में रखे गए सोने-चांदी का कुछ हिस्सा निकालकर, दूसरों को ब्याज पर दिया जा सकता है। इससे उनका उपव्यवसाय और भी फायदेमन्द बन सकता था। आपको ऐसा लग रहा होगा कि इससे वे मुश्किल में पड़ सकते थे: क्या हो अगर धन के असली मालिक आएँ और तुरन्त अपना धन लौटाने की माँग करें? लेकिन तब तक सुनार समझ चुके थे कि जब बहुत लोग उनके पास अपने सिक्के रखते हैं तो औसत के नियम के हिसाब से धन लौटाने की माँग से उन्हें परेशान होने की सम्भावना नहीं बनती थी। हो सकता था कि धन के कुछ मालिक किसी दिन आकर अपने धन की माँग करें, लेकिन जमा करने वालों में से ज्यादातर या सब लोग एक साथ ऐसा नहीं करेंगे। इसलिए इतना ही काफी था कि उस धन का कुछ हिस्सा सुरक्षित रखा जाए जिससे माँगने वालों की पूर्ती हो सके और बाकी की धन राशि उधार में दी जा सकती है। इस तरह बैंकिंग का जन्म हुआ।

बैंक-रन या बैंकिंग भगदड़ क्या है?

लेकिन कभी-कभार चीजें काफी बिगड़ जाती थीं। जैसे एक अफवाह - झूठी या सच्ची - उड़ती थी कि बैंक का निवेश गड़बड़ हो गया है और बैंक के पास इतनी सम्पत्ति नहीं बची है कि वो अपने जमाकर्ताओं को उनका धन लौटा सके। इस अफवाह के चलते सभी जमाकर्ता घबराकर हड़बड़ी में अपना धन वापस लेने पहुँच जाते थे कि कहीं उनका सारा पैसा न डूब जाए। इसे 'बैंक पर भगदड़' या बैंक-रन कहते हैं। अक्सर इससे बैंक पूरी तरह बैठ जाता, भले ही अफवाह झूठी रही हो। एक साथ सभी लोगों द्वारा अपने धन या पैसों की माँग कोई भी बैंक पूरी नहीं कर सकता। ऐसे भगदड़ के समय जल्दी पैसा खड़ा करने के लिए बैंक को अपनी सम्पत्ति इतने कम दामों पर बेचना पड़ेगी कि उसके पास इतनी सम्पत्ति ही नहीं होगी कि वह लोगों का सारा पैसा चुका पाए।

बैंक पर ऐसे धावे, चाहे वे झूठी अफवाहों पर ही आधारित हों, अच्छी-खासी स्वस्थ संस्थाओं को भी तबाह



चित्र-1: ट्रस्टों पर से भरोसा उठना। Y-अक्ष न्यू यॉर्क ट्रस्ट कम्पनियों में जमा राशि दर्शा रहा है (मिलियन डॉलर्स में)।

कर सकते हैं। इसलिए 'बैंक पर भगदड़' की अफवाह, उनकी कब्र खोदने वाली भविष्यवाणियाँ साबित होती थीं। ऐसी भविष्यवाणियाँ जो अपने-आप को सही साबित कर ही देंगी। कई बार बैंक धराशायी इसलिए नहीं होता था कि यह अफवाह उड़ी है कि उसका निवेश गड़बड़ हो गया है बल्कि अफवाह मात्र इतनी होती थी कि 'बैंक पर भगदड़' मचने वाली है। ऐसी अफवाह उड़ना इसलिए भी आसान हो जाता क्योंकि पहले भी कई बार ऐसी 'बैंक पर भगदड़' मची थी।

महामन्दी (ग्रेट डिप्रेशन) के पहले अमरीका में वित्तीय प्रणाली का इतिहास कई आर्थिक संकटों और

'बैंक पर भगदड़' का गवाह रहा है - जैसे कि 1873 और 1907 की भगदड़ आदि। इन आर्थिक संकटों में, भगदड़ अक्सर एक संक्रामक शृंखला बन जाती थी। बैंक जैसे-जैसे धराशायी होते, दूसरे बैंकों पर लोगों का विश्वास कमजोर हो जाता, इसलिए सभी बैंक एक-के-बाद-एक ताश के पत्तों की तरह ढहते-उखड़ते जाते।

सन् 1929 की महामन्दी के पूर्व और 1990 के दशक में आए आर्थिक संकट जिसने एशिया को अपनी चपेट में लिया था, दोनों के बीच समानताएँ महज इत्तेफाक नहीं हैं। सारे आर्थिक संकटों में कुछ-न-कुछ समानता तो होती ही है।



बैंक-रन के समाधानों की खोज

बैंकिंग भगदड़ों की समस्या के चलते, इसके समाधानों की खोज शुरू हुई। गृहयुद्ध और प्रथम विश्वयुद्ध के बीच अमरीका का अपना कोई केन्द्रीय बैंक नहीं था। 'फेडरल रिज़र्व' का निर्माण 1913 में हुआ था, लेकिन इससे पहले यहाँ 'राष्ट्रीय बैंकों' का एक तंत्र मौजूद था जिसके अपने कुछ नियम-कायदे थे। इसके साथ ही, कुछ स्थानीय जगहों पर बैंकर्स ने अपने संसाधन जुटाकर समाशोधन गृह (clearing houses) बना लिए थे जो भगदड़ की स्थिति में संयुक्त रूप से अपने सदस्यों की मदद करते ताकि जिस बैंक पर भगदड़ हो रही हो, उसे सम्भाला जा सके। इसके अलावा, कुछ राज्य सरकारें बैंक की जमा राशियों पर बीमा भी दे रही थीं।

लेकिन 1907 के आर्थिक संकट ने इस प्रणाली की खामियाँ उजागर कर दीं और आज हमारे वर्तमान संकट का पूर्वाभास भी दे दिया। इस संकट का जन्म न्यू यॉर्क के 'ट्रस्ट' नामक संस्थानों में हुआ था। ये ट्रस्ट बैंक की तरह लोगों से जमा राशि स्वीकार करने लगे। असलियत में ये ट्रस्ट अमीर ग्राहकों की विरासत और जायदाद का संचालन करने के लिए बने थे। चूँकि शुरू में इनका काम कम जोखिम वाली आर्थिक गतिविधियों में शामिल होना था, सरकार द्वारा ट्रस्ट का विनियमन या रेग्युलेशन कम किया जाता था। इसलिए इनकी आरक्षित निधि की आवश्यकता और नकदी आरक्षित निधि भी राष्ट्रीय बैंकों की तुलना में कम होती थी। लेकिन जैसे-जैसे बीसवीं सदी के

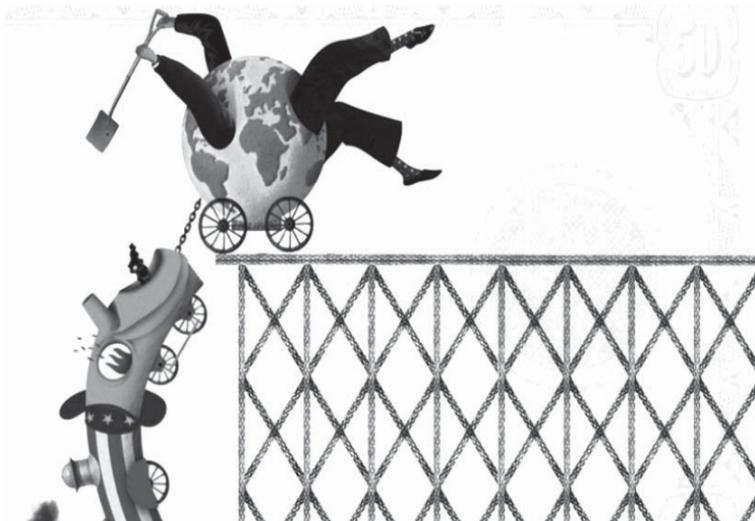
पहले दशक में अर्थव्यवस्था ने तेज़ी पकड़ी, इन ट्रस्टों ने अपने पैर जोखिम भरे रियल एस्टेट और शेयर बाज़ार में पसारने शुरू कर दिए। राष्ट्रीय बैंकों के लिए ये क्षेत्र निषेध थे। चूँकि बैंकों की तुलना में इन ट्रस्ट पर कम विनियमन था, वे अपने जमाकर्ताओं को ज़्यादा ब्याज दे पाते थे। इसी दौरान ट्रस्टों ने राष्ट्रीय बैंकों की मज़बूती की प्रतिष्ठा का लाभ उठाया और जमाकर्ता भ्रमित होकर इन्हें उतना ही सुरक्षित मानने लगे। नतीजा यह हुआ कि ट्रस्ट तेज़ी-से बढ़ने लगे, और 1907 तक न्यू यॉर्क शहर के ट्रस्टों की कुल सम्पत्ति (assets) राष्ट्रीय बैंकों की कुल सम्पत्ति के बराबर पहुँच गयी थी।

इसी दौरान, ट्रस्टों ने न्यू यॉर्क क्लियरिंग हाउस में जुड़ने से इन्कार

कर दिया। यह न्यू यॉर्क शहर के राष्ट्रीय बैंकों का एक संघ था जो भगदड़ की स्थिति में एक-दूसरे को मदद करके, सलामती सुनिश्चित करता था। अगर ट्रस्ट इसमें शामिल होते तो उन्हें बैंकों की तरह अपनी नकद आरक्षी निधि यानी कैश रिज़र्व बढ़ानी पड़ती। ऐसा करने से उनकी पूँजी कम हो जाती और उनका मुनाफा भी कम हो जाता।

क्या था 1907 का आर्थिक संकट?

सन् 1907 के आर्थिक संकट की शुरुआत निकरबोक्सर्स (Knickerbockers) ट्रस्ट के डूबने से हुई। यह न्यू यॉर्क शहर का एक बड़ा ट्रस्ट था जिसने बड़े पैमाने पर शेयर बाज़ार में सट्टेबाज़ी में पैसे लगाए, जो डूब गए। इससे न्यू यॉर्क के अन्य ट्रस्ट भी



दबाव में आ गए। अपने पैसे वापस निकालने के लिए भयभीत जमाकर्ताओं का ताँता लग गया, भगदड़ शुरू हो गई। न्यू यॉर्क क्लियरिंग हाउस ने भी ट्रस्टों को उधार देने से मना कर दिया। कई अच्छे खासे ट्रस्टों पर भी भगदड़ शुरू हो गई। लोगों की अपना पैसा निकालने की भगदड़ में सिर्फ दो दिन में एक दर्जन बड़े-बड़े ट्रस्ट डूब गए। क्रेडिट मार्केट ठप हो गए थे और शेयर बाज़ार तेज़ी-से गिरे क्योंकि शेयर व्यापारियों को अपना धन्धा चलाने के लिए कर्ज़ नहीं मिल पा रहा था। कारोबार का हौसला तो मानो हवा हो गया।

खुशकिस्मती से, जे.पी. मॉर्गन नाम के एक बैंकर, जो न्यू यॉर्क के सबसे अमीर आदमी थे, इस भगदड़ को रोकने के लिए आगे आए। यह जानते हुए कि यह संकट जल्द ही अच्छे-खासे संस्थानों, बैंक और ट्रस्ट, सब को निगल लेगा, मॉर्गन अन्य अमीर बैंकर्स, जैसे जॉन डी. रॉकफेलर, और अमरीकी सरकार के वित्तीय सचिव के साथ बैंक और ट्रस्ट की आरक्षी निधि बढ़ाने का प्रयास करने लगे ताकि वे लोगों की पैसे की माँग को झेल सकें। एक बार जब लोग आश्वस्त हो गए कि वे अपने पैसे बैंक या ट्रस्ट से वापस निकाल सकते हैं, घबराहट कम हुई और भगदड़ रुक गई। हालाँकि, यह आर्थिक संकट एक हफ्ते से थोड़ा ही ज़्यादा चला, लेकिन उसने शेयर बाज़ार को डुबा दिया

और अर्थव्यवस्था को चौपट कर दिया। इसके बाद चार साल की मन्दी बनी रही, उत्पाद 11% गिर गया और बेरोज़गारी 3% से बढ़कर 8% हो गई।

केन्द्रीय बैंक का निर्माण

इस बार आपदा से तो बाल-बाल बच गए थे लेकिन दुनिया को बचाने का ज़िम्मा फिर से किसी जे.पी. मॉर्गन के कन्धों पर छोड़ना अच्छा उपाय नहीं था, इसलिए 1907 के आर्थिक संकट के बाद कई बैंकिंग सुधार होने लगे। सन् 1913 में, राष्ट्रीय बैंकिंग सिस्टम का अन्त हुआ और इस जगह अमरीका के केन्द्रीय बैंक का निर्माण हुआ। इसका उद्देश्य था कि सारे बैंकों को पर्याप्त आरक्षी निधि रखने के लिए बाध्य किया जा सके और वे अपने खातों को केन्द्रीय बैंक के निरीक्षण हेतु खुला रखें।

हालाँकि, इस नई व्यवस्था ने बैंक आरक्षित निधि को मानकीकृत और केन्द्रीकृत कर दिया था, लेकिन इसके बावजूद बैंकों पर भगदड़ होने के खतरे को पूरी तरह खत्म नहीं किया जा सका। सन् 1930 के दशक के शुरुआती सालों में इतिहास का एक और गम्भीर बैंकिंग संकट सामने आया। जैसे-जैसे अर्थव्यवस्था में गिरावट हुई, चीज़ों की कीमत बढ़ी। इस झटके ने अमरीका के कर्ज़ में दबे किसानों को बुरी तरह त्रस्त किया, जिसकी वजह से 1930, 1931



और 1933 में कर्ज की अदायगी न करने (loan defaults) के कई मामले सामने आए। इसके बाद बैंकों पर भगदड़ होने लगी। प्रत्येक भगदड़ की शुरुआत मध्य-पश्चिमी बैंकों से हुई और फिर पूरे अमरीका में फैल गई। कमोबेश सारे आर्थिक इतिहासकार इस बात से सहमत हैं कि इसी बैंकिंग संकट ने मन्दी को महामन्दी में बदल दिया।

इसकी प्रतिक्रिया में एक ऐसे तंत्र का निर्माण हुआ जिसमें कई सुरक्षा उपाय मौजूद थे। ग्लास-स्टीगल एक्ट-कानून ने बैंकों को दो श्रेणियों में बाँट दिया: वाणिज्यिक बैंक और निवेश बैंक। वाणिज्यिक बैंक में लोग जमा राशियाँ सुरक्षित रख सकते थे और जब चाहें उसे निकाल सकते थे। निवेश बैंक में ऐसा नहीं था और अपनी पूँजी ब्याज कमाने की दृष्टि से रखी जाती थी। वाणिज्यिक बैंकों पर

जोखिम उठाने को लेकर सख्त प्रतिबन्ध थे, और इसके बदले में उन्हें कभी भी केन्द्रीय बैंक द्वारा ऋण मिल सकता था। शायद सबसे ज़रूरी बात, उनकी सारी जमा राशि सरकार द्वारा करदाता के पैसे से बीमाकृत होती थी। निवेश बैंक में इतने सख्त नियम नहीं थे, और इसे स्वीकार्य भी माना गया था, चूँकि उन्हें बैंकों पर होने वाली भगदड़ का खतरा नहीं था क्योंकि वे लोगों से बैंक डिपोजिट नहीं लेते थे।

इस नए कानूनी तंत्र ने लगभग 70 साल तक वित्तीय संकटों से अमरीकी अर्थव्यवस्था की सुरक्षा की। कई बार चीज़ें बिगड़ भी जाती थीं - जैसे 1980 के दशक में, बुरी किस्मत और खराब नीति के मिले-जुले असर ने कई बचत और कर्ज संस्थाओं को असफल कर दिया। ये संस्थाएँ एक समय अमरीका में प्रमुख गृह-ऋण देने वाले

बैंक बन चुकी थीं। चूँकि इन संस्थाओं की जमा राशियाँ सरकार द्वारा बीमाकृत थीं, अन्ततः यह राशि सरकार को चुकानी पड़ी, और यह राशि सकल घरेलू उत्पाद का 5 प्रतिशत थी जो आज (सन् 2008 में) लगभग 700 अरब डॉलर होगी। इन संस्थाओं के डूबने से कुछ समय के लिए उधारी में कमी आ गई, जो 1990-91 की मन्दी का एक प्रमुख कारण था। लेकिन चीजें इससे ज्यादा नहीं बिगड़ीं। हमें बताया गया कि बैंकिंग संकटों का युग समाप्त हो गया है। ऐसा नहीं था।

साथे में अनियंत्रित बैंकिंग

बैंक क्या है?

सुनने में यह एक बचकाना सवाल लग सकता है। हम सभी जानते हैं कि एक बैंक कैसा दिखता है: एक

बड़ी संगमरमर की इमारत होती है। लेकिन एक अर्थशास्त्री के नज़रिए से, बैंकों की परिभाषा उनके रंगरूप से नहीं होती बल्कि इससे होती है कि वे क्या काम करते हैं। उन उद्यमी सुनारों के दिनों से आज तक, बैंकिंग का सबसे ज़रूरी लक्षण यह रहा है कि जो लोग अपने पैसे बैंक की सुरक्षा में जमा करते हैं, बैंक उन्हें नगदी की तत्काल उपलब्धता का वचन देता है। हम जानते हैं कि बैंक ज्यादातर पैसे ऐसी सम्पत्तियों में निवेश कर देता है जिन्हें तुरन्त नगद में परिवर्तित नहीं किया जा सकता। फिर भी औसत के नियम अनुसार, बैंक को परेशानी नहीं होती, जब तक लोगों का विश्वास बना रहे।

नीलामी-दर प्रतिभूति व्यवस्था

सन् 1984 में लेहमेन ब्रदर्स (Lehman Brothers) बैंक द्वारा गढ़ी गई



नीलामी-दर प्रतिभूति (auction-rate security) पर विचार कीजिए। यह व्यवस्था कुछ इस तरह काम करती थी: कोई भी व्यक्ति अपना पैसा एक लम्बी अवधि के लिए किसी उधार लेने वाली संस्था को देता है, कानूनी तौर पर हो सकता है कि यह धन लगभग 30 साल के लिए बँध जाए। लेकिन थोड़े-थोड़े समय के अन्तराल में, प्रायः हफ्ते में एक बार संस्था एक छोटी-सी नीलामी आयोजित करेगी। कुछ पुराने निवेशक जो इस व्यवस्था से निकलना चाहते हैं, उन्हें यह नीलामी मौका देती है। इसमें नए निवेशक उन पुराने निवेशकों की जगह लेने के लिए बोली लगाते हैं। इस नीलामी से तय की गई ब्याज दर तब तक सारे निवेशकों पर लागू होगी जब तक कि अगली नीलामी नहीं होती।

नीलामी-दर प्रतिभूति का विचार इन दो समूहों में तालमेल बिठाना था - एक, वे लोग जो लम्बी अवधि के लिए अपना पैसा निवेश करना चाहते थे और दूसरा, वे लोग जो पैसे लेना चाहते थे। लेकिन ये तो बिलकुल बैंक के काम जैसा है। एक तरफ वे लोग हैं जो लम्बे समय तक जमा राशि रखते हैं और दूसरी तरफ वे लोग जो बैंक से उधार लेते हैं।

लोगों को ऐसा लगता था कि नीलामी-दर प्रतिभूति व्यवस्था सबको पारम्परिक बैंकिंग की तुलना में एक बेहतर सौदा दे रही थी क्योंकि इस

व्यवस्था में निवेशकों को बैंक डिपॉज़िट की अपेक्षा ज़्यादा ब्याज दर मिल रहा था। और दूसरी तरफ सिक्यूरिटी यानी प्रतिभूति जारी करने वाले बैंकों को इस व्यवस्था में लम्बी-अवधि के बैंक लोन की तुलना में कम ब्याज पर बाज़ार से पैसे मिल रहे थे। ऐसा प्रतीत होता कि लेहमेन ब्रदर्स बैंक एवं आम लोगों, दोनों को, इस व्यवस्था से फायदा हो रहा था।

वे ऐसा कैसे कर पा रहे थे? जवाब ज़ाहिर है, कम-से-कम आज पीछे मुड़कर देखने पर ऐसा प्रतीत होता है कि पारम्परिक बैंक बहुत विनियमित होते हैं, उन्हें नगद आरक्षी निधि रखनी होती है, पर्याप्त पूँजी रखनी होती है और जमा बीमा प्रणाली में पैसे जमा करने होते हैं। इसकी तुलना में निवेशीय बैंक नीलामी-दर प्रतिभूति द्वारा लोगों से पैसा जमा करवा रहे थे परन्तु उन पर पारम्परिक बैंक के कड़े नियम लागू नहीं थे। न ही उन्हें बीमा पर खर्चा करना पड़ता था। इसलिए वे लोगों को बेहतर ब्याज देकर भ्रमित रख पाए। वास्तव में, वे अनियंत्रित और असुरक्षित थे - बैंकिंग सुरक्षा-जाल के संरक्षण में नहीं थे।

पारम्परिक बैंक की छाया में चलने वाली अनियंत्रित योजनाएँ जैसे कि नीलामी-दर प्रतिभूति व्यवस्था एक निवेशीय बैंक द्वारा चलाई जा रही थी। धीरे-धीरे लोगों की जमा राशि पारम्परिक बैंक से हटकर निवेशीय बैंक की इन योजनाओं में आ गई।

यह छोटी पूँजी नहीं थी। एक समय इन बैंकों ने इस माध्यम से 40,000 करोड़ डॉलर पूँजी जमा कर ली थी।

एक बार जब नीलामी-दर प्रतिभूति व्यवस्था की नीलामी बैठ गई तो लोगों का विश्वास उठने लगा। अब एक-के-बाद-एक बैंक-भगदड़ की तरह नीलामी प्रक्रिया बैठती चली

गई। सभी जगह निवेशकर्ता बाहर निकलना चाहते थे पर उनकी जगह लेने के लिए अन्य लोग तैयार नहीं थे। इस कारण लेहमेन ब्रदर्स जैसे बैंक बैठ गए और विश्वभर में वित्तीय संकट का दौर फैल गया। संकट से बचाने के पारम्परिक बैंकों के नियम व बीमा पर खर्च को इन्होंने बायपास कर दिया था।

पॉल क्रुगमैन: एक अमरीकी अर्थशास्त्री हैं। उन्हें वर्ष 2008 में, नए व्यापार सिद्धान्त और नए आर्थिक भूगोल के क्षेत्र में उनके योगदान के लिए, अर्थशास्त्र में नोबेल पुरस्कार मिला। अर्थशास्त्र से जुड़ी कई किताबें लिख चुके हैं और इनके लेख कई जर्नल और पत्रिकाओं में प्रकाशित होते रहते हैं।

अँग्रेज़ी से अनुवाद: अनमोल जैन: *संदर्भ* पत्रिका से सम्बद्ध हैं। साथ ही, डॉ. हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय, सागर, म.प्र. से अँग्रेज़ी साहित्य से एम.ए. कर रही हैं।

सम्पादन: अरविंद सरदाना: सामाजिक विज्ञान समूह, *एकलव्य* से सम्बद्ध। एनसीईआरटी एवं अन्य राज्यों की पाठ्यपुस्तकों की निर्माण प्रक्रियाओं से गहरा जुड़ाव रहा है।

यह लेख पॉल क्रुगमैन की किताब *द रिटर्न ऑफ डिप्रेशन इकोनॉमिक्स एंड द क्राइसिस ऑफ 2008* के अध्याय 8 'बैंकिंग इन द शैडो' का सम्पादित स्वरूप है।

समस्त चित्र *द इकोनॉमिस्ट* में प्रकाशित लेख 'द स्लमप्स दैट शेपड मॉडर्न फाइनेन्स' से लिए गए हैं।

